खंडकाव्य का स्वरूप और विशेषताएँ

"साहित्य क्षेत्र के सृजन में हृदय की भावतंत्रियाँ जब मानस चेतना से एकाकार होकर अभिव्यक्ति के नवीन द्वार खोलती है तो अनेक विधाओं के विविध वर्णी कुसुम मुकुलित होते है।"[१] वर्तमान युग में महाकाव्य से भी अधिक प्रभावशाली स्वरूप में खंडकाव्य साहित्य उद्यानका ऐसा ही विशिष्ट पुष्प है जो साहित्य परंपरा को नवीन सन्दर्भ प्रदान करने में सफल रहा है।

भारतीय आचार्यो ने काव्यहेतु, काव्य प्रयोजन और लक्षण की भाँति काव्य भेंदो को भी उतना ही महत्त्व दिया है । भामह से लेकर विश्वनाथ तक कई आचार्यो ने काव्य के भेद का विवेचन किया है।

विश्वनाथ ने साहित्य को ऐंन्द्रिय बोध के आधार पर दृश्य वाक्य और श्रव्यकाव्य इन दो बृहत् वर्गो में रखा है। दृश्य काव्य का आधार देखना है। इसे रूपक भी कहा गया है। श्रृव्य काव्य का आधार श्रवण करना, सुनना है। पद्य, गद्य और गद्य–पद्य से मिश्रित काव्य अर्थात चम्पू यह काव्य के तीन भेद माने गये है।

पद्य काव्य के दो प्रमुख वर्ग प्रबन्ध और मुक्तक है। प्रबध काव्य प्रदीर्घ और जटिल संरचना का काव्य होता है। प्रबन्ध के भी तीन भेद माने गये है। (१) महाकाव्य (२) खंडकाव्य (३) एकार्थ काव्य । महाकाव्य में व्यक्ति के समग्र जीवन का चित्रण होता है। महाकाव्य की रचना तब होती है जब कवि पात्र के सम्पूर्ण जीवन, समस्त युगीन परिस्थितियों के चित्रण की ओर उध्दत होता है किन्तु खंडकाव्य की रचना तो कवि मन पर जब जीवन की कोई एक घटना अंकित है अथवा पात्र–जीवन का कोई विशिष्ट क्षण कवि को काव्य रचना की ओर प्रेरित करता है तब कवि खंडकाव्य में ही अपनी अनुभूति को साकार देखता है। वास्तव में प्राचीन आचार्यो ने महाकाव्य के स्वरूप का जिस विस्तार के साथ विवेचन किया है उतना खंडकाव्य का नहीं किया है वे खंडकाव्य के संबंध में मौन ही रहे है। कई विद्वानों ने खंड शब्द को लेकर आपत्ति प्रकट की है खंड शब्द में उन्हें खंडित होने का भाव दिखाई देता है। एक और कारण यह भी है कि खण्ड शब्द में जो 'ण' शब्द है वह संस्कृत और हिंदी में कर्ण कटू माना जाता है। इससे किसी शब्द का प्रारम्भ नही होता और साथ ही इसमें टूटन या खंडित होने का भाव होने के कारण ही आक्षेप लिये गये थे क्योंकि खंडित होना अशुभ माना जाता है। इसके लिए लघुकाव्य शब्द भी ठीक नहीं है क्योंकि लघु शब्द से आकार की लघुता होना, उद्देश्य की लघुता का आभास देता है। अत: खंडकाव्य ही सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है। कतिपय आलोचकों को खंडकाव्य के 'खण्ड' शब्द से खंडित होने की ध्वनि निकलती सी प्रतीत होती है किंतु खंडकाव्य किसी कथा का टुकड़ा मात्र नही है। उसमें न तो बिखराव होता है और न ही वह कथा का ऐसा कोई खंड होता है जो अधूरा खंडित प्रतीत होता हो। खंडकाव्य का कथासूत्र गतिमान न होते हुए भी अपने आप में पूर्ण होता है। वास्तव में खंडकाव्य की कथावस्तु एक ऐसी मर्मस्पशी घटना पर आधारित होती है जो अपने आप में एक विशिष्ट उद्देश्य धारण किए होती है।

प्रबन्धकाव्य का ही एक भेद खंडकाव्य होने से प्रबन्ध काव्य के कुछ गुण इसमें होना स्वाभाविक है। जिस प्रकार महाकाव्य में व्यक्ति के समग्र जीवन की अभिव्यक्ति होती है, खंडकाव्य में जीवन के

---

[१] हिंदी के खंडकाव्यों में युगबोध – डॉ. गज भारद्वाज – पृ.क्र. ०१

किसी एक ही अंग, रूप या पक्ष का चित्रण होता है फिर भी वह अपने आप में पूर्ण होता है। इसमें कथा का क्षेत्र सीमित होते हुए भी एक तारतम्य रहता है।

खंडकाव्य की व्याख्या :– खंडकाव्य शब्द साहित्य जगत में कोई नया नाम नही है। इसकी अजस्त्रधारा संस्कृत काल से ही विद्यमान रही है किन्तु इसका स्वरूप आधुनिक काल में ही अधिक निश्चित हो पाया है। भारतीय साहित्य कोश में खंडकाव्य को इस तरह परिभाषित किया गया है "जीवन के अपार विस्तार को उसके बृहत्तम आयामों में चित्रित करने वाले महद्‌कार काव्य–रूप महाकाव्य से भिन्न जीवन का एक पक्षीय खंडचित्र प्रस्तुत करनेवाला लघु आकार काव्य का रूप"[१] खंडकाव्य को महाकाव्य का खंडित रूप या लघु रूप मानते हुए आचार्य विश्वनाथ ने संस्कृत काव्यशास्त्र में "खंडकाव्य" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया है। उनकी उक्ति है "खंडकाव्य भवेत्काव्यस्यैक देशानुसारिच।"[२] अर्थात महाकाव्य के एक देश या अंश का अनुसरण करनेवाला काव्य खंडकाव्य कहलाता है।

आचार्य विश्वनाथ की परिभाषा का संवर्धन करते हुए विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते है– "महाकाव्य के ही ढ़ंग पर जिस काव्य की रचना होती है पर जिसमें पूर्ण न ग्रहण करके खंड जीवन ही ग्रहण किया जाता है, जिससे वह प्रस्तुत रचना के रूप में स्वत: पूर्ण प्रतीत होता है।"[3] इस परिभाषा में 'खंड जीवन' शब्द खंडित जीवन का आभास देता है जो कि खंडकाव्य के लिए उपयुक्त नही लगता और साथ ही इन्होंने खंडकाव्य की रचना महाकाव्य के ढ़ंग पर मानी है किन्तु महाकाव्य के तत्व उसी विस्तार और उत्कर्ष के साथ इसमें समाविष्ट नहीं हो सकते।

खंड शब्द को स्पष्ट करते हुए डॉ. शकुंतला दुबे ने लिखा है कि– "खंडकाव्य के खंड शब्द का यह अर्थ कदापि नहीं है कि वह बिखरा हुआ या किसी महाकाव्य का खंड है प्रत्युत यह खंड शब्द उस अनुभूति के स्वरूप की ओर संकेत करता है जिसमें जीवन अपने सम्पूर्ण रूप में प्रभावित न कर आंशिक या खंड रूप में प्रभावित करता है।"[४]

खंडकाव्य में समग्र जीवन का ऐसा खंडचित्र होता है जो अपनी महत्ता के कारण कवि को अधिक प्रभावित करता है। इसलिए खंडकाव्य को महाकाव्य में वर्णित समग्र जीवन के एक खंड का चित्र मानना होगा।

भगीरथ मिश्र का कथन है–"प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खंडकाव्य या खंड प्रबंध है–प्राय: जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक उद्‌घाटन होता है और अन्य प्रसंग संक्षेप में रहते है। इसमें भी कथा संगठन आवश्यक है, सर्गबध्दता नहीं। इसमें भी वस्तु–वर्णन, भाव–वर्णन एवं चरित्र का चित्रण किया जाता है पर कथा विस्तृत नहीं होती।"[५] यह परिभाषा हमे उचित प्रतीत होती है क्योंकि यह खंडकाव्य संबंधी सभी तत्वों की ओर संकेत करती है।

---

1 भारतीय साहित्यकोश – संपादक डॉ. नगेन्द्र – पृ.क्र. ३१३
2 भारतीय साहित्यकोश – संपादक डॉ. नगेन्द्र – पृ.क्र. ३१३
3 वाड.मय विमर्श – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – पृ.क्र. ३९
4 काव्य रूपों के मूल स्त्रोत और उसका विकास – डॉ. शकुंतला दुबे – पृ.क्र. ३१
5 काव्यशास्त्र – भगिरथ मिश्र – पृ.क्र. ६१

आचार्य बलदेव उपाध्याय खंडकाव्य के विषय में लिखते है–''वह काव्य जो मात्रा में महाकाव्य से छोटा परंतु गुणों में उससे कदयपि शून्य न हो, खंडकाव्य कहलाता है। महाकाव्य विषय–प्रधान होता है परंतु खंडकाव्य मुख्यत: विषयी–प्रधान होता है, जिसमें कवि कथानक के स्थूल ढाँचे में अपने वैयक्तिक विचारों का प्रसंगानुसार वर्णन करता है।''[१]

डॉ. उपाध्याय ने खंडकाव्य के विषय पर अधिक प्रकाश डाला है किन्तु उसके स्वरूप पर कम । उनका यह कथन, महाकाव्य विषय–प्रधान होता है और खंडकाव्य विषयी–प्रधान ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि कोई भी खंडकाव्य एक ही समय में भाव और विचार दोनों को साथ लेकर ही चल सकता है।

बाबु गुलाबराय खंडकाव्य के विषय में लिखते है कि–''खंडकाव्य में एक ही घटना को मुख्यता दी जाकर उसमें जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी सी मिल जाती है।''[२] गुलाबरायजी ने भी खंडकाव्य के स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया है।

डॉ. एस. तंकमणि अम्मा के अनुसार –'' किसी व्यक्ति के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या किसी व्यक्ति के चरित्र के एक मार्मिक पहलू का विश्लेषण करते हुए और प्रबंध का निर्वाह करते हुए सर्गबध्द या सर्गरहित तथा एक छंदात्मक, बहुछंदात्मक अथवा मुक्त छंदात्मक शैली में जो काव्य रचा जाता है वह खंडकाव्य है।''[३] डॉ. सरनामसिंह शर्मा अरूण ने खंडकाव्य को इस प्रकार परिभाषित किया है – ''काव्य के एक अंश का अनुसरण करनेवाला खण्ड काव्य होता है। उससे जीवन की पूर्णता अभिव्यक्ति नहीं होती । उसकी रचना के लिए कोई एक घटना अथवा सम्वेदना मात्र पर्याप्त होती है।''[४]

हिंदी साहित्यकोशाकार ने भी अधिकतर इन्ही विशेषताओं को दर्शाया है– ''खंडकाव्य एक ऐसा पद्यशब्द कथाकाव्य है जिसमें कथानक में इस प्रकार की अन्विति हो कि उसमें अप्रासंगिक कथाएं सामान्यतया अन्तर्भुक्त न हो सके, कथा में एकांगिता साहित्यदर्पणकार के शब्दों में एकदेशीयता हो तथा कथा–विन्यास क्षेत्र में क्रम, आरंभ–विकास–चरमसीमा और निश्चित उद्देश्य में परिणति हो।''[५]

खंडकाव्यों में कथा की एकांगिता और सर्गबध्दता पर सभी संस्कृत आचार्यो एवं आधुनिक चिंतको ने विशेष बल दिया है।

खंडकाव्य –पाश्चात्य धारणा :– पश्चिम में काव्य संबंधी प्रकरण शिथिल है। अत: वहाँ खंडकाव्य जैसी विधा स्थिर नहीं की गई । वहाँ कवि व्यक्तित्व, विषय, शैली आदि की एक मिश्रित दृष्टि से कविता के भेद किये गए है। युनानी साहित्य में प्लेटो ने काव्य के तीन भेद दिए – ''अनुकरणात्मक काव्य, प्रकथनात्मक काव्य व मिश्र काव्य। अनुकरणात्मक में नाटक, प्रकथनात्मक में आख्याान तथा मिश्र में दोनों के सम्मिलित रूप को स्थान दिया है।''[६]

प्लेटो के पश्चात उन्हीं के शिष्य अरस्तू ने काव्य का वर्गीकरण पाँच आधारों पर किया है – ''१. कवि व्यक्तित्व, २. विषय, ३. मिश्र, ४. अनुकरण– रीति ५. माध्यम।''[७]

---

1 संस्कृत आलोचना – डॉ. बलदेव उपाध्याय – पृ.क्र. ६२
2 काव्य के रूप – गुलाबराय – पृ.क्र. २३
3 आधुनिक खंडकाव्य : डॉ. एस. तंकमणि अम्मा – पृ.क्र. २०५
4 उद्धृत – स्वातन्त्रोत्तर हिंदी प्रबंध काव्य – डॉ. बनवारीलाल शर्मा – पृ.क्र.
5 हिंदी साहित्यकोश – संपादक डॉ. धिरेन्द्र वर्मा – पृ.क्र. २४८
6 उद्धृत – हिंदी के खंडकाव्यों में युग बोध – डॉ. राज भारद्वाज – पृ. क्र. ०८
7 अरस्तु का काव्यशास्त्र अनुवाद (अनुवाद) डॉ. नगेन्द्र तथा महेन्द्र चतुर्वेदी – पृ.क्र. ६२

कवि व्यक्तित्व के आधार पर दो भेद किए है – वीरकाव्य और व्यंग्य काव्य। वीरकाव्य के अन्तर्गत देवसूक्त, महाकाव्य और त्रासदी को रखा है। व्यंग्य काव्य के अन्तर्गत कामदी, अवगीति को समाहित किया है। वास्तव में काव्य रचना में केवल कवि व्यक्तित्व एक मात्र कारण नहीं होता अपितु उसके लिए प्रतिभा, देशकाल, वातावरण की भी अहम् भूमिका होती है। अत: किसी एक को आधार मानकर किया गया वर्गीकरण युक्ति संगत प्रतीत नहीं होता।

अरस्तू ने विषय के आधार पर काव्य के तीन भेद किए है – उदात्त काव्य, यथार्थ काव्य और क्षुद्र काव्य।

उदात्त काव्य में महाकाव्य, त्रासदी और देवसूक्त को रखा है।

यथार्थ काव्य में यथार्थ जीवन के चित्रण करनेवाले काव्य को रखा है।

क्षुद्र काव्य में कामदी और अवगीति काव्य को रखा है।

विषय के आधार पर अरस्तू ने उदात्त और यथार्थ का पृथक्करण किया है वह उचित नहीं है। यथार्थपरक काव्य में भी उदात्तता हो सकती है। अत: यह वर्गीकरण भी युक्तियुक्त नही है। अरस्तू के काव्य वर्गीकरण का तीसरा आधार मिश्र है। इसमें कवि व्यक्तित्व एवं विषय का मिश्रण दोनों को समाहित किया गया है। काव्य विभाजन का आधार स्पष्ट एवं सुस्थिर होना चाहिए। यह वर्गीकरण भी उपयुक्त नहीं है क्योंकि मिश्र के आधार से तो वर्गीकरण पूरा न हो सकेगा।

अरस्तू का काव्य का चौथा आधार अनुकरण–रीति है इसमें समाख्यान काव्य और दृश्य काव्य आते है।

अरस्तू का पाँचवा आधार माध्यम है इसमें गद्य और पद्य आते है।

अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर अरस्तू ने अपने समय के साहित्य को देखकर काव्य वर्गीकरण का स्तुत्य प्रयास किया है। इस वर्गीकरण में उनका समस्त समकालीन साहित्य वर्गीकृत हो गया है। साथ ही यह उल्लेखनीय है कि उनका वर्गीकरण भारतीय काव्य वर्गीकरण से कुछ अंशो में मेल भी खाता है। अप्रत्यक्ष रूप में दृश्य, श्रव्य तथा प्रबंध व मुक्तक के संकेत अरस्तू ने काव्य वर्गीकरण में दिए है। वर्गीकरण की उनकी पध्दति में अनुगम पध्दति की कमियाँ होते हुए भी विचार और कल्पना का नितांत अभाव नहीं है।

पाश्चात्य समीक्षक विलियम हेनरी हडसन ने काव्य का वर्गीकरण काफी स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण किया है। "उन्होंने काव्य को विषयी–प्रधान और विषय–प्रधान दो वर्गो में विभाजित किया है। विषयीगत काव्य में कवि व्यक्तित्व की प्रधानता पर बल दिया गया।"[१] विषयी प्रधान काव्य को प्रगीत (Lyrics) तथा विषय–प्रधान काव्य को एपिक (Epic) संज्ञा दी।

एपिक के तीन प्रकार बतलाए है –एपिक ऑव ग्रोथ, एपिक ऑव आर्ट तथा मॉक एपिक। हडसन ने एपिक के लघु रूप (Mock epic) की विस्तृत चर्चा की है। इसके लघु रूप के कारण खंडकाव्य से इसकी समानता होती है यद्यपि इसमें समानता कम विषमता अधिक है। "मॉक एपिक में अत्यन्त तुच्छ/क्षुद्र विषय का वर्णन व्यंग्यपूर्ण शैली में लाघव के साथ किया जाता है।"[२] किन्तु

---

[1] William Henry Hudson – An Introduction to the study of literature – P. No. 96

[2] William Henry Hudson – An Introduction to the study of literature – P. No. 108

खंडकाव्य का विषय महान, उदात्त या साधारण तो हो सकता है पर तुच्छ कदापि नहीं होता और नहीं खंडकाव्य में व्यंग्य को महत्त्व दिया जाता है।

पाश्चात्य काव्य वर्गीकरण में खडकाव्य जैसी कोई काव्य विधा स्थिर नहीं की गई है फिर भी जिन रचनाओं को वहाँ 'शॉर्ट एपिक' या 'स्टोरी पोयम' या 'टेल इन वर्स' या 'एपिसोड' की संज्ञा दी गई है, वह खंडकाव्यों के समीपवर्ती रचनाएँ है।

हिंदी साहित्यकोष के अनुसार – ''पाश्चात्य देशों में प्रबंधो (Narratives) के दो रूप महाकाव्य और कथाकाव्य (रोमांस) बहुत पहले ही मान लिए गए थे किन्तु लघु निबंध काव्यों (खंडकाव्य) को वहाँ भिन्न नाम दिया गया, उसे नेरेटिव पोयट्री (Narrative Poetry) प्रबंध काव्य ही कहा जाता था, रोमांस कथा काव्य (रोमांस) नहीं।''[१]

अंत में निष्कर्ष यहीं निकाला गया है कि Epic Narrative (आख्यान) नामक पाश्चात्य काव्य ही खंडकाव्य के सबसे अधिक समीपवर्ती विधा है क्योंकि आख्यान काव्य में किसी घटना या विचार शैली का कथात्मक शैली में प्रतिपादन होता है और यहीं गुण इसे किसी स्तर तक खण्डकाव्य के समीप ले जाता है। Epic Narrative में जीवन की किसी एक विशिष्ट घटना का ही वर्णन काव्य में किया जाता है। खंडकाव्य में भी विशिष्ट घटना का वर्णन किया जाता है। Epic Narrative में जटिलता का अभाव रहता है, उसी प्रकार खंडकाव्य में भी अवांतर उपकथाओं का समावेश नहीं रहता। अत: भारतीय खंडकाव्य विधा और पश्चिम के Epic Narrative में लक्षणों की दृष्टि से पर्याप्त समानता है।

फलत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि खंडकाव्य महाकाव्य में वर्णित किसी एक विशिष्ट घटना या चरित्र को ही अपना आधार बनाकर लिखा जाता है। वास्तव में खंडकाव्य महाकाव्य सदृश्य होता है लेकिन उसमें उपकथानकों से प्राप्त जटिलता नहीं होती । चरित्रों की भीड़ नही होती, रसों की दृष्टि से कोई नियम नही होता और न ही अंगीरस अनिवार्य माना जाता है। खंडकाव्य की शैली युगशैली भी नहीं हो सकती और नहीं उद्देश्य युगबोध हो सकता है। एक ही कर्म की प्राप्ति पर्याप्त मानी जाती है। खंडकाव्य का नायक प्राय: मानवीय जीवन से निकट सम्बन्ध स्थापित करता है। वास्तव में महाकाव्य की अपेक्षा अधिक लघु और संक्षिप्त होने पर भी खंडकाव्य अपने आप में संपूर्ण रचना होती है।

खंडकाव्य की मूल प्रेरणा :– खंडकाव्य की मूल प्रेरणा को स्पष्ट करते हुए डॉ. शकुन्तला दुबे ने लिखा है – ''खंडकाव्य की प्रेरणा के मूल में अनुभूति का स्वरूप एक सम्पूर्ण जीवन खंड की प्रभावात्मकता से बनता है। जीवन के मर्मस्पर्शी खंड का बोधमात्र कवि के हृदय में नहीं होता, प्रत्युत उसका समन्वित प्रभाव उसके हृदय पर पड़ता है तब प्रेरणा के बल पर जो रूप खड़ा होता है वह खंडकाव्य कहलाता है।''[२] खंडकाव्य के रचियता कथा के प्रमुख पात्र के जीवन खंड को विस्तृत रूप देते है तो कही पर संक्षेप में परिधि को छोटा कर अपनी काव्यगत विशेषताओं का परिचय देते है। यही कारण है कि खंडकाव्य का कथानक कही बड़ा होता है तो कही बहुत छोटा किन्तु कथा के इस विस्तार

---

[1] हिंदी साहित्यकोश भाग–१ – संपादक धिरेन्द्र वर्मा – पृ.क्र. ५२२

[2] काव्य रूपो के मूल स्त्रोत और उसका विकास – डॉ. शकुंतला दुबे – पृ.क्र. २२

एवं संकोच के तारतम्य से खंडकाव्य की महत्ता नहीं आँकी जाती, क्योंकि जीवन के किसी एक अंग को स्पर्श करनेवाला खंडकाव्य अपनी छोटी सी परिधि में भी अपना महत्त्व सिध्द करता है।

खंडकाव्य काव्य का स्वरूप :– महाकाव्य की भाँति खंडकाव्य भी प्रबंध काव्य का ही एक भेद है। 'खंडकाव्य' शब्द से खंडित होने की ध्वनि का प्रस्फुटन होता प्रतीत होता है किंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि खंडकाव्य महाकाव्य का एक अंग अथवा एक अध्याय है न तो यह खंडित अनुभव का बिखरा रूप है।

''खंड शब्दांश से, प्रस्तुत प्रसंग में अभिप्राय आत्मपर्यवसित जीवन खंड के किसी महत्त्वपूर्ण घटना की पूर्ण अनुभूति से है। यह अनुभूति अपने आप में पूर्ण होती है तथा अभिव्यक्त होकर जीवन के संबंधित पक्ष की झलक भर प्रस्तुत कर देती है। जिस प्रकार चावल कें एक दाने से यह पता चल जाता है कि पात्र के सारे चावल पक गए है या नहीं, उसी प्रकार खंड काव्य में वर्णित एक घटना जीवन के संबंधित पक्ष को उभार कर चमका देती है।''[१]

वास्तव में खंडकाव्य में जीवन के किसी महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली पक्ष अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना का ही चित्रण होता है। यह घटना शरीर के किसी एक अंग की भाँति अधूरी नही होती अपितु वह स्वयं अपने आप में पूर्ण होती है जैसे कहानी अपने लघु आकार में भी अत्यन्त प्रभावशाली होती है उसी प्रकार खंडकाव्य भी अपनी लघुता में परिपूर्ण होता है। ''जहाँ महाकाव्य में नायक का सम्पूर्ण जीवन–चरित्र समग्रता से चित्रित किया जाता है वही खंडकाव्यकार नायक के जीवन के किसी महत्वपूर्ण एवं मार्मिक प्रसंग को उठाकर विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति करता है। एक ही चरित्र को आधार बनाकर महाकाव्य और खण्डकाव्य दोनों की रचना की जा सकती है उदाहरणार्थ – तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' और नरेश मेहताकृत 'सशंय की एक रात' दोनों ही राम के जीवन से संबंधित काव्य है किन्तु 'रामचरितमानस' में राम को सम्पूर्ण जीवन की विशालता एवं उदात्तता के साथ चित्रित करना जहाँ कवि को अभिष्ट रहा है वही 'संशय की एक रात' में सेतूबंध की समस्या उठाकर राम के मानसिक संघर्ष एवं द्वन्द्व के सर्वांगपूर्ण चित्रण को काव्य का विषय बनाया गया है।''[२] इस प्रकार खंडकाव्य जीवन की किसी महत्त्वपूर्ण घटना को अपनाता है ''उसमें एक ही मुख्य घटना के प्रचुर विस्तार की समस्त सामग्री संजोयी जाती है। मुख्य घटनाओं की सहायक कुछ गौण घटनाएँ भी खंडकाव्य में हो सकती है, जो मुख्य घटना को उत्कर्ष प्रदान करती हो किन्तु उनका स्वतंत्र अस्तित्व खंडकाव्य में नहीं होता। खंडकाव्य में एक ही मुख्य मार्मिक संवेदना होती है। खंडकाव्य का वृत्त सुगठित, वस्तुपरक तथा प्रख्यात या काल्पनिक होता है उसका कथानक सुस्पष्ट और अनुज्झितार्थ संबंध से युक्त होता है। कथाविन्यास में क्रम, आरम्भ, विकास, चरमसीमा और कोई निश्चित उद्देश्य होता है। खंडकाव्यों की उपमा कुछ विद्वानों ने कहानी और एकांकी से दी है।''[३] एक मुख्य मार्मिक संवेदना तीनो काव्य विधाओं में होने पर भी खंडकाव्य, कहानी और एकांकी में पर्यात शैली भेद है। पद्य और गद्य के अन्तर के साथ ही खंडकाव्य का शिल्प विधान भी भिन्न होता है। खंडकाव्य की कथा का क्रमिक विकास होता है । कथा

---

[1] हिंदी के खंडकाव्य : शिवप्रसाद गोयल – पृ.क्र. ४२

[2] हिंदी के खंडकाव्यों में युगबोध – डॉ. राज भारद्वाज पृ.क्र. १२

[3] उद्धृत – हिंदी के खंडकाव्य – डॉ शिवप्रसाद गोयल – पृ. क्र. ४२

का आरंभ और विकास वर्णनात्मक ढ़ंग से धीरे–धीरे होता है। खंडकाव्य में एक ही प्रमुख घटना का नियोजन होने के कारण प्रासंगिक कथाओं का समावेश नहीं होता । एक ही मुख्य कथा होती है। किसी प्रासंगिक कथा या प्रसंगो से मुग्ध होकर खंडकाव्यकार उसे खंडकाव्य की कथा के रूप में चुनता है।

केन्द्रबिन्दु किसी एक घटना या पात्र विशेष को लेने के कारण खंडकाव्य में पात्रों की संख्या भी सीमित रहती है। खंडकाव्यकार नायक के चरित्र–चित्रण पर ही पूर्ण प्रकाश डालता है। कवि खंडकाव्य के नायक रूप में देव, काल्पनिक या ऐतिहासिक व्यक्ति, सुर–असुर, धीरोदात्त, धीर–ललित, धीर–प्रशांत, धीरोदात्त में से किसी का भी चयन करता है।

खंडकाव्य में व्यक्ति और समाज के लिए कोई सामयिक या चिरन्तन उपदेश निहित रहता है। नायक को किसी एक फल की प्राप्ति होती है। भाषा और विभाषा दोनों में खंडकाव्य की रचना होती है। खंडकाव्य की रचना एक या अनेक छंदो में छंदोबध्द, गीतात्मक, मुक्तछंदीय अथवा नाटकीय किसी एक प्रणाली में होती है।

इस प्रकार खंडकाव्य ऐसी प्रबंध काव्यात्मक रचना है जिसमें नायक के जीवन की किसी एक घटना, जोकि अपने आप में पूर्ण होती है, उस पर प्रकाश डाला जाता है। कथावस्तु और पात्र प्रख्यात या काल्पनिक होते है। चतुर्फल में से किसी एक फल को प्राप्त कराते हुए नायक के माध्यम से खंडकाव्यकार समाज को नई दिशा प्रदान करता है।

खंडकाव्य के तत्व :– खंडकाव्य के स्वरूप को निर्धारित करने वाले मुख्यत: सात तत्व माने जाते है। जो इस प्रकार है – १. कथानक, २. पात्र या चरित्र–चित्रण, ३. संवाद, ४. रस या भाव व्यंजना, ५. देशकाल, ६. उद्देश्य, ७. शैली।

१. **कथानक** :– खंडकाव्य का समस्त सौन्दर्य एवं प्राणशक्ति उसकी वस्तु–संघटना में निहित है। एक ही घटना को केन्द्र बनाकर अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय कवि को देना होता है। खंडकाव्य की रचना कवि के लिए गागर में सागर भरने का प्रयत्न करना है क्योंकि कथा लघु कलेवर में सीमित होने पर भी अपने आप में पूर्ण, स्पष्ट और प्रबंधवक्रता से युक्त होती है। इसलिए खंडकाव्यकार अतिलाघव के साथ जीवन के किसी एक पक्ष की झलक अथवा जीवन के पक्ष–विपक्ष की व्याख्या अथवा प्रतीकों या बिंबो के माध्यम से सामयिक जीवन की किसी जटिल समस्या को कथा में श्रृंखलाबध्द करते हुए चरम उद्देश्य तक पहुँचता है। खंडकाव्य की एक तथ्यता उसका प्राण है। लघु कलेवर होने के कारण खंडकाव्य के कथानक में न तो अवान्तर कथाएँ होती है और न ही पात्रों की संख्या अधिक होती है। संधियों की योजना भी आवश्यक नही मानी जाती । वस्तु–वर्णन संक्षिप्त होता है। कथानक ऐतिहासिक प्रख्यात एवं उत्पाद्य में से कोई भी एक हो सकता है। कथा चरम स्थिति पर समाप्त न होकर निश्चित विकास के साथ समाप्त होती है।

२. **पात्र और चरित्र–चित्रण** :– जैसा कि हम पहले ही कह चुके है कि खंडकाव्य के पात्र पुरूष–स्त्री, मानव–दानव, प्रसिध्द या काल्पनिक तथा उदात्त, धीरोदात्त, धीर–प्रशांत या धीरोद्वत में से कोई भी हो सकता है। लघु स्वरूप के कारण पात्रों की संख्या सीमित होती है। सभी पात्र कोई न कोई प्रतीक लिए अपने युग की पृष्ठभूमि का निर्वाह करते हुए सामयिक जनजीवन के किसी वर्ग की

अभिव्यंजना करते है। आधुनिक काल में खंडकाव्यों में प्रतीकात्मक उपस्थिति अधिक दिखाई देती है। अधिकतर मिथकीय पात्रों के द्वारा समाज की ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है जैसे 'एक कंठ विषपायी' में बह्मा का युध्द को सामूहिक आत्मघात बतलाना, 'शंबूक' में शंबूक द्वारा वर्ण व्यवस्था बदलने का आग्रह करना आदि।

खंडकाव्यकार को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है वह किसी भी पात्र का चरित्र–चित्रण करें। पात्रों के चरित्र विकास का अवकाश न होने पर भी रचनाकार अपनी काव्य कला के द्वारा उसके चरित्र संबंधी प्रमुख विशेषता पर प्रकाश डालता ही है। आधुनिक खंडकाव्य में नायक के चरित्र के किसी एक पक्ष को उजागर करने की लालसा कवियों में बराबर रही है। इसलिए कुछ रचनाएँ चरित्र–प्रधान भी बन पड़ी है उदा. मैथिलीशरण गुप्त का 'प्लासी का युध्द' और 'सिध्दराज' तथा सियारामशरण का 'मौर्य विजय' ।

३. **संवाद** :– कथा को गति देने, उसमें रोचकता और नाटकीयता का समावेश करने हेतु कवि खंडकाव्य में मार्मिक एवं तर्कपूर्ण संवादों की योजना करता है।

४. **रस या भाव व्यंजना** :– जीवन के किसी एक ही घटना या प्रसंग से संबंधित होने के कारण खंडकाव्य में एक ही रस का पूर्ण परिपाक होता है। अन्य रस अपनी उपस्थिति का अहसास करवा कर भी मुखरित होने का अवसर नहीं खोज पाते। कभी–कभी खंडकाव्य में किसी उदात्त भाव के चरम सौन्दर्य को ही प्रस्तुत किया जाता है वहाँ किसी भी रस का पूर्ण परिपाक नहीं होता। आधुनिक खंडकाव्यों में जो भावबोध, संघर्ष और बेचैनी मिलती है वह भाव–विकास के अन्तर्गत ही आती है।

५. **देशकाल** :– खंडकाव्य में देशकाल का व्यापक चित्रण न होने पर भी कवि अपनी रचना के संकलनत्रय का विशेष ध्यान रखता है। कवि युगबोध अथवा देशकाल को साथ लेकर ही रचना काल में प्रवृत्त हो सकता है इसलिए खंडकाव्य में देशकाल की स्पष्टता की दृष्टि से घटना और पात्रों से संबंधित स्थान और काल का चित्रण अवश्य होता है। कवि अपने युग की संवेदनाओं से संवेदित होकर ही अभिव्यक्ति की ओर प्रेरित होता है इस अर्थ में काव्य समाज से प्रभावित होता है और उसे प्रभावित करता भी है। खंडकाव्यकार का प्रमुख लक्ष्य अपने युग की विचारधारा का पालन और उसका प्रतिष्ठापन करना होता है इसी रूप में रचना देशकाल सापेक्ष–स्वरूप ग्रहण करती है। अत: खंडकाव्य की दृष्टि से समाज सापेक्षता अपनी कालातीत पृष्ठभूमि पर सदैव प्रासंगिक रहती है।

६. **उद्देश्य** :– खंडकाव्य में कोई घटना, प्रसंग या समसामयिक समस्या का चित्रण, समस्या का निराकरण, जीवन के किसी विशेष पहलू या समस्या की मौलिक व्याख्या या समस्या पर नवीन दृष्टिकोण से विचार और सामयिक उपदेश इसका चित्रण करना ही कवि का मुख्य उद्देश्य रहता है जैसे युध्द चिंतन को लेकर लिखा गया 'अंधायुग' और 'एक कंठ विषपायी' आदि। खंडकाव्यों में चतुर्फलो में से किसी एक की प्राप्ति या प्रयास भी मिलता है।

७. **शैली** :– खंडकाव्य पद्यबध्द रचना है उसकी रचना शैली उदात्त और गरिमामय होती है क्योंकि इसमें किसी घटना का पूर्ण मनोयोग से चित्रण किया जाता है, जीवन के किसी मार्मिक पक्ष की झाँकी

प्रस्तुत की जाती है और वह पक्ष अपने आप में पूर्ण अनुभूति का आनंद देने वाला होता है। "शैली की दृष्टि से खंडकाव्यों को तीन आधारों पर विभाजित किया जा सकता है।"[१]

क) वर्णन–काव्य के आधार पर – १. वर्णनात्मक, २. विचारात्मक, ३. भावात्मक ४. आत्मविश्लेषणात्मक ५. प्रतीकात्मक

ख) सर्गबध्दता के आधार पर – १. सर्गबध्द २. सर्गहीन

ग) अभिव्यंजना प्रणाली के आधार पर – १. छंदोबध्द, २. गीतात्मक, ३. मुक्तछंदीय, ४. नाटकीय

आधुनिक काल में विषयवस्तु के परिवर्तन के साथ शैली के नियमों में भी परिवर्तन हुए है। एक ही छंद में रचना अथवा संगीत में छंद परिवर्तन की सूचना खंडकाव्य के लिए आवश्यक अनुबंध नहीं है। खंडकाव्य का नामाकरण भी महाकाव्य की भाँति मुख्य घटना के आधार पर हो सकता है जैसे 'तुलसीदास', 'नहुष' अथवा 'उत्तरा', 'रानी दुर्गावती', 'द्रौपदी' अथवा प्रतीकात्मक रूप में 'एक और पुरूष'।

खंडकाव्य की विशेषताएँ

१. खंडकाव्य प्रबंध काव्य का एक भेद है अत: उसमें सुगठित वस्तुविन्यास आवश्यक है। कथा का क्रमिक विकास और प्रबंध वक्रता वांछनीय है। विचार चिन्तन का विकास उन खंडकाव्यों में होता है जिनकी कथा सूक्ष्म और वायवीय होती है। कथा चरमावस्था पर समाप्त न होकर एक निश्चित विकास में उसका अंत होता है।

२. खंडकाव्य में नायक या समाज के जीवन की किसी एक घटना से सम्बध्द सुविन्यास युक्त कथानक होता है। जीवन से संबंधित झाँकी और व्याख्या भी मिल जाती है। घटना का संबंध नायक के व्यक्तिगत जीवन या जनजीवन से होता है जिनका प्रतिनिधित्व नायक करता है। महाकाव्य में अवांतर कथाएं आती है। खंडकाव्य के कथानक में इसके लिए कोई स्थान नहीं होता। विस्तृत वर्णन न होने के कारण कथानक की गति मंद न होकर तीव्र होती है।

३. खंडकाव्य का आकार लघु होने के कारण सर्गो की अनिवार्यता नहीं होती। प्रारंभ से अंत तक एक सर्ग भी हो सकता है और सर्ग बाँटे भी जा सकते है। सर्गबध्दता खंडकाव्य का आवश्यक नियम नहीं है।

४. खंडकाव्य का कथानक विख्यात या काल्पनिक दोनों प्रकार का होता है।

५. खंडकाव्य में एक रस का परिपाक अथवा कई रसों की अपूर्ण योजना अथवा एक भाव का चरम सौन्दर्य या परिपूर्णता होती है। कथा में प्रारंभ से अंत तक एक ही रस पूर्णता के साथ विद्यमान रहता है।

६. खंडकाव्य में एक छंद अद्यांत विद्यमान रहता है और अनेक भी। छंद बध्दता या सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन की सूचना आवश्यक नहीं होती।

---

[1] हिंदी के खंडकाव्य – डॉ. शिवप्रसाद गोयल – पृ.क्र. ५०

७. खंडकाव्य का एक सुनिश्चित उद्देश्य होता है जो दूध में नवनीत की भाँति समाया हुआ रहता है। चतुर्फल में से किसी एक की प्राप्ति अभिष्ट होती है। आधुनिक खंडकाव्यों में सामयिक ज्वलन्त समस्या का उद्घाटन ही उद्देश्य रहता है उनका समाधान नहीं बतलाया जाता है।

८. नायक देव, दानव, मानव में से किसी एक वर्ग का होता है नायक तथा अन्य पात्र ख्यात और कल्पित में से किसी भी श्रेणी के हो सकते है। नायिका प्रधान खंडकाव्य भी लिखे गये है।

९. खंडकाव्य आकार मे लघु होने के कारण पात्रों की संख्या सीमित होती है। पात्रों की अनावश्यक भीड़भाड़ नहीं होती है।

१०. खंडकाव्य की शैली उदात्त और गरिमामय होती है कथानक में प्रबंधवक्रता अथवा प्रकरण वक्रता की योजना होती है।

११. खंडकाव्य आकार मे लघु होते हुए भी अपने आप में पूर्ण होता है अन्य काव्यरूप का खंड नहीं।

१२. खंडकाव्य की रचना सुशिक्षित नगरों की शुध्द भाषा या विभाषा में होती है।

१३. नाटकीयता खंडकाव्य के कनाथक का आवश्यक गुण होता है किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि वह नाटक या एकांकी का प्रतिरूप है।

१४. खंडकाव्य में कथानक या घटना जब अत्यन्त छोटी होती है तब उसे स्वरूप देने के लिए वर्णनात्मकता का समावेश किया जाता है। उदाहणार्थ कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' खंडकाव्य में संदेश भेजने की घटना को वर्णन के द्वारा खंडकाव्य का रूप दिया गया है।